Class — T.D.C. Part III
Paper — VII (Logic and Analysis)
Topic — तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा (Definition by equivalent Words)

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
R.N. College, Hajipur

तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा परिभाषा
(Definition by equivalent Words)

किसी शब्द की परिभाषा कभी-कभी तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा दी जाती है। उदाहरण के लिए, 'कनक' शब्द की परिभाषा सोना के रूप में देना उसकी तुल्यार्थक परिभाषा है। कनक एवं सोना तुल्यार्थक शब्द हैं। किन्तु कनक शब्द के अन्य अर्थ भी होते हैं — गेहूँ, पलाश, धथूरा आदि। यदि यह कहा जाये कि 'कनक पीला है', तो इस वहाँ 'कनक' शब्द का प्रयोग सोना के अर्थ में किया जा रहा है। यहाँ ही कहा जा सकता है कि गेहूँ या पलाश या धथूरा पीला है। इससे यह स्पष्ट है कि किसी शब्द के एक से अधिक तुल्यार्थक अर्थ हों, तो उनके प्रयोग के लिए उतने ही नियमों की आवश्यकता होती है जितना उस शब्द के तुल्यार्थक अर्थ होते हैं। Hospers के शब्दों में —

"If a word with more than one sense, there will be as many rules governing its application as there are senses of the word."

जब किसी शब्द का तुल्यार्थक एक शब्द होता है, तो उसकी तुल्यार्थक परिभाषा दी जा सकती है। जैसे — चन्द्र का शशी, सूर्य का भानु आदि। किन्तु ऐसे पर्यायवाची शब्द कम हैं जिनका अर्थ समान हो। कभी-कभी तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा किसी एक शब्द की परिभाषा देने के लिए लम्बे वाक्यखण्ड की आवश्यकता होती है।

Hospers के अनुसार तुल्यार्थक शब्दों के

द्वारा यदि किसी शब्द की परिभाषा दी जाये, तो तार्किक दृष्टि से वह भले-ही सन्तोषप्रद हो, किन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वह परिभाषा कभी-कभी सन्तोषप्रद नहीं होती। उदाहरण के लिए, यदि 'भाई' (Brother) शब्द की परिभाषा 'समपितृक पुरुष' (Male Sibling) के रूप में दी जाये, तो तार्किक दृष्टि से यह परिभाषा सन्तोषप्रद है। 'समपितृक पुरुष' शब्द का अर्थ भी वही होता है जो भाई का है अर्थात् एक ही माता-पिता की सन्तान (Offspring of the same parent)। किन्तु यह परिभाषा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सन्तोषप्रद नहीं है। इसका मुख्य कारण है कि जो व्यक्ति 'समपितृक पुरुष' शब्द का अर्थ नहीं जानता हो, तो उसके लिए दूसरे शब्द की आवश्यकता होगी और इसप्रकार क्रमिक रूप में 'अनवस्था दोष' उत्पन्न होगा। अतः यह परिभाषा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अनुपयुक्त होगी। Hospers ने लिखा है —

"It is possible for a definition logically satisfactory but not psychologically satisfactory."

इसप्रकार किसी शब्द की परिभाषा वैसे तुल्यार्थक शब्दों के द्वारा दी जानी चाहिए जिससे श्रोता या पाठक परिचित हों।

एक शब्द के द्वारा तुल्यार्थक परिभाषा दी जा सके, ऐसे पर्यायवाची शब्द कम हैं। इसके अतिरिक्त कुछ शब्द ऐसे हैं जो साक्षात् रूप से व्यक्ति के इन्द्रियानुभव से जुड़े होते हैं या वस्तु के सरल गुणों को व्यक्त करते हैं। इन शब्दों के तुल्यार्थ शब्द-समूह किसी भाषा में नहीं होते। जैसे — काला, लाल, सुख, आनन्द, पीड़ा, भय, तीखा, खट्टा आदि। इन शब्दों की तुल्य शब्दों के द्वारा परिभाषा नहीं दी जा सकती। तीखा या खट्टा पदार्थ खिलाकर ही उस स्वाद को समझाया जा सकता है। लाल, काला आदि वस्तु को

दिखलाकर ही उस रंग को बतलाया जा सकता है। इसलिए इन शब्दों की निदर्शनात्मक परिभाषा (Ostensive Definition) दी जा सकती है।

कुछ अमूर्त शब्द (Abstract Word) ऐसे हैं जिनके तुल्यार्थ दूसरे शब्द हैं ही नहीं। कुछ शब्दों के अर्थ इतने व्यापक हैं कि इनसे अधिक व्यापक अर्थवाले शब्द नहीं मिल सकते, जिनके अन्तर्गत इन्हें रखा जा सके। जैसे — काल, सत्ता, सम्बन्ध, ब्रह्माण्ड आदि। इन शब्दों के तुल्य-शब्द नहीं होते हैं। इसलिए इन शब्दों की तुल्यार्थक परिभाषा नहीं दी जा सकती।

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि सभी शब्दों की परिभाषाएँ तुल्य शब्दों के द्वारा नहीं दी जा सकती हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि सभी शब्दों के अनुरूप तुल्य शब्द होते ही नहीं हैं।

——— X ——— X ———